- बैक्टिरिया (बैसिलस थुरीन जियान्सिस किस्म करस्टकी 20.750–1.0 कि.ग्रा./है. की दर से छिड़काव करना चाहिये।

**रासायनिक नियंत्रण** :– आवश्यकता पड़ने पर निम्नलिखित कीटनाशियों में से किसी कीटनाशी का नाशीकीट अनुसार फसल पर नाशीकीट प्रबंधक हेतु छिड़काव किया जा सकता है,

| कीटनाशी | नाशीकीट | मात्रा (ग्राम सक्रिय तत्व/है. |
|---|---|---|
| क्लोरपाइरीफास 20 ईसी. | फली छेदक, रूट वर्म | 500 |
| थायोडीकार्व 75 डब्ल्यू पी. | फली छेदक, | 468 |
| क्लोरपाइरीफास 1.5 डीपी. | फली छेदक, | 375 |
| फेन्थोयट 20 ईसी. | फली छेदक, | 1000 |
| क्यूनालफास 1.5 डीपी. | फली छेदक, | 350 |
| कार्बारिल 5 डीपी. | फली छेदक, | 1250 |
| कार्बारिल 10 डीपी. | फली छेदक, | 2500 |
| कार्बारिल 50 डब्ल्यूपी. | फली छेदक, | 750 |
| क्लोरपाइरीफास 20 ईसी. | दीमक (बीज उपचार) | 15–20 मिली/कि.ग्रा. बीज |
| कार्बानडेजिम + कार्बोफल्कन | सूत्रमि + उकठा रोग | 3 प्रतिशत + 0.2 प्रतिशत |
| जिंक फास्फॉइड | कृंतक (चूहा) | विष चुग्गा |
| एल्यूमिनियम फास्फॉइड | सूत्रमि + उकठा रोग | 1 टेबलेट/बिल |

**प्रतिरोधी/सहनशील किस्में** :– बहुविधि प्रतिरोधी किस्में जैसे – भारती, पूसा 372–362, BG 391, KWR 108, एच. 355 उगानी चाहिए।

**फली छेदक प्रतिरोधी किस्में जैसे** – जे.जी. 315, जे. जी. 74 (सी.जेड.), पी.डी.जी. 84–10 (आर.ए.जे.), सी.सी.वी. 7 (एस.जेड.), एच. 208, 35, अवरोधी (एच.डब्ल्यू.पी.जेड.) उगानी चाहिए।

**प्रस्तुतकर्ता :**

पी. मूवेन्थन, मुरली बास्करन, अनिल दीक्षित, के. सी. शर्मा, पी. एन. शिवलिंगम, अमित कुमार गुप्ता, अमित दीक्षित, उत्तम सिंह एवं कन्हैया जायसवाल।



**प्रकाशक :**

निदेशक
भा.कृ.अनु.प.–राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़– 493225
फोन – 0771–2225333
वेबसाईट – www.nibsm.org.in



Publication No. 14, 2018


Farmer FIRST

# Farmer FIRST Programme
## फार्मर फर्स्ट प्रोग्राम

(Agricultural Extension Division)
(कृषि प्रसार विभाग)
Indian Council of Agricultural Research
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

# चने के नाशीकीट एवं उनका प्रबंधन

ICAR - National Institute of Biotic Stress Management
भाकृअनुप – राष्ट्रीय जैविक स्ट्रैस प्रबंधन संस्थान
Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2225333
बरोंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2225333
Website : www.nibsm.org.in

चना रबी की प्रमुख दलहनी फसल है एवं विश्वभर में करीब 9 मिलियन हैक्टर क्षेत्र पर उगाया जाता है चना सेम एवं मटर के बाद तीसरी महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। चने की फसल को फली छेदक, काला माइ, सफेद लट, दीमक, सेमीलूपर, कटवर्म, तम्बाकू की सूंडी, सिस्ट, जड़ ग्रंथि, रेनीफोर्म एवं लिसन सूत्रहनि आदि नाशीजीव हानि पहुँचाते है। फली छेदक इसका प्रमुख हानिकारक कीट है एंव यह कीट अकेले 10–15 प्रतिशत हानि पहुँचाता है।

## आर्थिक देहली स्तर

| नाशीकीट | फसल अवस्था | आर्थिक देहली स्तर |
|---|---|---|
| चना फली छेदक | प्रजननीय | 2 से 3 अण्डा/पौधा<br>या<br>2 इंस्टार/10 पौधा या एक परिपक्व |
| कट वर्म | अंकुरण/पौध | लार्वा/10 पौधा<br>एक लार्वा/मीटर$^2$<br>लम्बाई (मिट्टी के अंदर) कटे हुए पौधे के पास |
| सेमी लूपर | वानस्पतिक | 2 लार्वा/10 पौधे |
| दीमक | अंकुरण/पौध | 5 ग्रसित पौधे/मीटर वर्ग |
| सफेदलट | अंकुरण/पौध | 5 लट्/मीटर वर्ग |

## समन्वित नाशीकीट प्रबंधन

### (अ) सस्य क्रियाओ द्वारा नियंत्रण :–

- गर्मियों में गहरी जुताई करनी चाहिये।
- फसल के अवशेषो को नष्ट कर देना चाहिये।

काला माइ

कटवर्म

सेमीलूपर

दीमक

सफेद लट

फली छेदक

- आधी सड़ी हुई गोबर की खाद या नीम खली/महुआ खली 500 कि.ग्रा./है. की दर से सूत्रकृमि प्रभावित क्षेत्र में काम में लेनी चाहिये।
- चने के साथ सरसों/गेहूँ/धनिया/ज्वार अंतरासस्य के रूप में उगाना चाहिये।
- अफ्रीकन गेंदा फसल के रूप में खेत की सीमा पर या चने की पंक्तियों के बीच उगाना चाहिये।
- चने के बुआई के तीस दिन बाद चुटाई (डिटोपिंग) करनी चाहिये।
- फसल पुष्पन की अवस्था पर बथुआ व विसिया सटाइवा को खेत से निकाल देना चाहिये।
- जड़ ग्रथि प्रभावित खेत में सोलेनेसी कुल की फसलें नहीं उगानी चाहिये।
- चना की प्रतिरोधी/सहनसील किस्में उगानी चाहिये।
- जल्दी एवं समय पर बुआई करे जल्दी पकने वाली किस्मों का चयन करना चाहिये।
- पूरे गाँव में एक साथ बुआई होनी चाहिये।
- खेत की मेंड़ पर बने चूहों के किलो को नष्ट कर देना चाहिये।
- यांत्रिक/भौतिक प्रबंधन करना चाहिये।
- प्रकाश प्रपंच (एक/पाँच एकड़) पक्षीयों हेतु खेत में मचान (50 से 70) बनाने चाहिये।

### (ब) जैविक/व्यावहारिक नियंत्रण :–

- प्रातिक शत्रु जैसे केम्पोलिटिस, लेडीबर्ड भृंग, क्राइसोपरला, स्टिंग बग, रेडुविड बग, ततैया व मकड़ी आदि का संरक्षण करना चाहिये।
- साप्ताहिक अन्तराल पर तीन बार स्पोडोप्टेरा एवं हेलिकोवर्पा विषाणु (एन.पी.वी.) 250 लार्वा तुल्यांक/एकड़ (1x109 पीआईवी/मिली) + 0.5 प्रतिशत गुड़ + 0.1 प्रतिशत टिपोल मिलाकर शाम के समय छिड़काव करें।
- पुष्पन से पहले 15 दिन अन्तराल पर नीम के बीज का सत (5 प्रतिशत) का फसल पर छिड़काव करें।